

हिंदुत्व की नौ मान्यताएँ

हिंदु आध्यात्मविद्या की ये नौ प्रधान मान्यताएँ हमारी पुस्तक "हिंदुत्व क्या है ?" की चौदवीं अध्याय का संक्षिप्त रूपांतरण है। उस अध्याय में ईसाई धर्म के अनुरूप नौ मान्यताएँ भी प्रस्तुत की गयी हैं, जो ईसाई धर्म के अनुयायीयों के साथ विचार विमर्श करने में अत्यंत सहायरूप होती हैं। दोनों पक्षों को साथ ही साथ देखना उन लोगों को काफी प्रकाशित करता है जो हिंदुत्व को पहली बार समझना चाह रहे हैं।

- 1 हमारे धर्मग्रंथों के प्रति आदर
वेद का उद्गम दिव्य है। वेद के आरंभिक मंत्र स्वयं भगवान के ही शब्द और सनातन धर्म के मूल सिद्धांत हैं।
- 2 सर्वव्यापी परमेश्वर
संसार में केवल एक, सर्वव्यापी परमेश्वर है जो कि अन्तर्यामी भी हैं और सर्वोत्कृष्ट भी हैं, सृष्टिकर्ता भी हैं और संघारकर्ता भी हैं।
- 3 तीन जगत और जगत सृजन का चक्र
तीन जगत विद्यमान हैं: स्थूल, सूक्ष्म और कारणात्मक -- और जगत सृजन, परिरक्षण और विसर्जन के अनन्त काल चक्र में घूमता रहता है।
- 4 कर्म और धर्म के नियम
कर्म, कार्य कारणों का नियम है जिससे प्रत्येक व्यक्ति अपना भविष्य अपने मनसा, वाचा और कर्मणा से स्वयं ही बनाता है-- और धर्म में, धर्मपरायण जीवन।
- 5 पुनर्जन्म और मोक्ष
आत्मा जन्म जन्मान्तरों तक पुनर्जन्म लेती रहती है जब तक की सारे कर्म बंधन समाप्त नहीं हो जाते और मोक्ष (आध्यात्मिक ज्ञान और मुक्ति पुनर्जन्मों के चक्र से) नहीं प्राप्त हो जाता। कोई भी आत्मा इस नित्य नियति से वंचित नहीं रहेगी।
- 6 मंदिर और अंतरस्थ जगत
दिव्य जीव दिव्य लोक में बसते हैं। मंदिर, विधिशास्त्र,

पूजा अर्चना, यज्ञ और अपनी साधना, मानव का इन देवताओं से संपर्क बनाने का साधन है।

7 गुरु के सान्निध्य में योग

परमेश्वर को जानने के लिए गुरु के साथ साथ नियम बद्ध जीवन, चित्त शुद्धि, तीर्थ दर्शन, जिज्ञासा और तप जरूरी हैं।

8 दया और अहिंसा

चूँकि सारे जीव पवित्र हैं, प्रेम और सम्मान करने योग्य हैं -- इसीलिए अहिंसा के अनुगामी हैं।

9 मार्गों की विभिन्नता

मुक्ति की ओर ले जाने वाले अनेक मार्ग हैं। यद्यपि लक्ष्य एक ही है, साधु सन्यासी उसे अलग अलग नाम और माध्यम से व्याख्यान करते हैं।